ISSN 2319-5339 IISUniv.J.A. Vol.4(1), 76-84 (2015)

वैश्वीकरण के दौर में हिंदी

डॉ. पूनम सेठी

राष्ट्र भाषा किसी राष्ट्र की रीढ़ होती है। देशव्यापी प्रसार एवं जन लोकप्रियता के कारण हिन्दी भारत की स्वाभाविक राष्ट्रभाषा है। भाषा का संसार एक जीता जागता संसार है। भाषा केवल एक माध्यम भर नहीं है, वह मनुष्य की समूची विकास-परम्परा की साक्षी है। मानव की सम्पूर्ण संस्कृति की भार साधक और आधारभूत शक्ति का नाम 'भाषा' होता है। भाषा के माध्यम से मनुष्य अपनी, अपने युग की, अपने परिवेश की तमाम आशाओं, आकांक्षाओं, उपलब्धियों, प्रवृत्तियों, सफलताओं व विफलताओं को ही संजोकर नहीं रखता अपितु अतीत की स्मृतियों व भविष्य की अपेक्षाओं को भी अनुभव करता है। भाषा एक भौतिक माध्यम भर नहीं है, वह विचारों और अनुभवों के तालमेल से निर्मित एक जीवनचर्या भी है। भाषा में ही जातीय स्मृतियाँ, ज्ञान-विज्ञान, संस्कृति और समाज का अनुभव होता है और उसे सुरक्षित रखा जाता है।

हिंदी भाषा भी इन्हीं अर्थों में भारतीय जीवन में केवल एक अभिव्यक्ति का माध्यम भर नहीं है, वह भारतीय जीवन की समग्रता के स्पन्दनों का ध्वन्यांकन भी है। इस बात को लक्ष्य करके ही महात्मा गाँधी कहा करते थे कि, 'हिन्दी का प्रश्न मेरे लिए देश की आजादी का प्रश्न है।' हिन्दी भाषा केवल एक भाषा मात्र नहीं है, वह सम्पूर्ण देश के संस्कार के रूप में पल्लवित और पुष्पित भाषा है। हिन्दी साहित्य के इतिहास और विकास को ध्यान से देखने पर ज्ञात होता है कि हिन्दी की जड़ें संस्कृत, प्राकृत, पालि, अपभ्रंश, लोक बोलियों, अरबी-फारसी अंग्रेजी आदि देशी-विदेशी भाषाओं के रस से सींची गयी हैं। भारतीय जीवन प्रणाली का वह गुण जिसे भारत की सहिष्णुता, सदाशयता और समन्वयकारी चेतना के रूप में जाना जाता है, बहुत लंबे काल के बाद हिन्दी भाषा के रूप में अपनी सम्पूर्ण चेतना के साथ अभिव्यक्त हुआ है।

हिन्दी भाषा के माध्यम से भारत की संस्कृति, साहित्य, तत्व-चिन्तन, आध्यात्मिक साधनाओं, जीवन-दर्शन, सामाजिक मूल्यों व मान्यताओं, सामाजिक, पारिवारिक तथा राष्ट्रीय संगठनों में सतत प्रवाहित होने वाले त्याग, निष्ठा एवं साधना से पूर्ण जिन आदर्शात्मक अमरतत्वों का उद्घाटन किया गया है वे भारत के विभिन्न प्रांतों, भाषाओं, धर्मों व सम्प्रदायों को सैकड़ों वर्षों से एक सूत्र में आबद्ध करते रहे हैं। हिन्दी की इस समन्वयवादी, लोक व्यापक प्रकृति का प्रभाव प्रारम्भ से ही भारतीय प्रशासन पर पड़ना स्वाभाविक था जिसके परिणामस्वरूप इसे राजभाषा स्वीकार किया गया। हिंदी को भारत की राजभाषा का पद इसलिए ही नहीं मिला कि उसे यहाँ के लोग बोलते हैं, बल्कि उसमें अनेक ऐसे गुण है कि वह भारत की ही नहीं विश्व की श्रेष्ठ भाषाओं में स्थान प्राप्त करने योग्य है। हिंदी में लिखित साहित्य ज्ञानात्मक, रचनात्मक, भावात्मक तथा उद्देश्यपरक हैं जो वैश्विक शांति और एकता स्थापित करने में प्रमुख भूमिका निभा सकता है।

जिस भाषा के साहित्य में लोक कल्याण निहित होता है, उसका निश्चय ही सम्मान व विस्तार होता है। यह भाषा वैश्विक उत्थान में सहायक और समर्थ है। हिंदी भाषा का साहित्य, 'साहित्य' की हर कसौटी पर खरा उतरता है। संसार की दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा 'हिन्दी' में वह समस्त विशेषताएँ हैं जो किसी आदर्श भाषा में होनी चाहिए।

भारतीय साहित्य ने विश्व को आदर्श जीवन-दर्शन और शैली प्रदान करने का महान कार्य किया है। ''गीता विश्व साहित्य का अंग है। इसमें मानव-जीवन की विभिन्न समस्याओं का समाधान है। पूर्व ही नहीं पाश्चात्य देशों के विद्वानों ने भी इसका महिमा गान किया है। हिंदी साहित्य का भण्डार उत्कृष्ट रचनाओं से भरपूर है। हिंदी की सामर्थ्य को परख कर ही बेल्जियमवासी विद्वान फादर कामिल बुल्के ने 'संस्कृत को महारानी, हिंदी को बहुरानी और अंग्रेजी को नौकरानी' की संज्ञा दी। कामिल बुल्के ने 'रामचरित मानस' और उसके रचनाकार तुलसीदास की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। नीति, ज्ञान, भाईचारा, शांति-सौहार्द्र स्थापित करने वाले इस ग्रंथ का दर्जनों विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है''।[1]

आज हमारी यह हिन्दी विश्वभाषा बनने की दिशा में उत्तरोत्तर अग्रसर है। हिन्दी का फलक वैश्विक संदर्भ प्राप्त कर रहा है। हिन्दी के वैश्विक फलक पर विचार करते हुए डॉ. सुरेश महेश्वरी लिखते हैं - ''आज विश्व में भारत ने अपनी पहचान बना ली है। भारत एक स्वतंत्र जनतांत्रिक राष्ट्र है। गुट निरपेक्ष राष्ट्रों का मुखिया भारत है। सार्क परिषद का प्रणेता और संस्कृति की दृष्टि से भी वह विश्व का पथ प्रदर्शक और अगुआ है। ऐसे भारत की भाषा हिन्दी है। इसलिए यदि भारत से निकटता बनानी हो तो हमें हिंदी के अध्ययन - अध्यापन को महत्व देना चाहिए, ऐसा विश्व के सभी राष्ट्रों ने सोचा। दूसरे, भारतवंशी लोग रोजगार हेतु पश्चिम के राष्ट्रों में गए हैं और पूरब के राष्ट्रों में भाईचारा, स्नेह, संस्कृति को लेकर अपना स्थान बनाया। इस कारण से भी हिंदी का अपना वैश्विक दायरा निर्मित हुआ। हिंदी सही अर्थों में स्नेह, सौहार्द, सहिष्णुता तथा भाई चारे की विश्व भाषा बनी है।''[2]

हिन्दी हिंद की भाषा है और भारतवर्ष को गहराई से समझने के लिए उसका सम्यक् ज्ञान अपेक्षित है- यह बात आज विश्वमन को स्पर्श कर रही है। जनसंचार माध्यमों की वैश्विक पहुँच हिन्दी की संभावनाओं और क्षितिज का विस्तार कर रही है, उसे विश्वस्तरीय विमर्श और स्पर्धा के लिए प्रेरित कर रही है। इस शती मे केवल वही भाषाएँ अपना अस्तित्व कायम रख पायेंगी जो कम्प्यूटर, इंटरनेट, ई-मेल तथा बेबसाइट की दुनिया में अपनी गहन एवं प्रभावी उपस्थिति का अहसास करा सकेंगी तथा तमाम नवीन उपलब्धियों और प्रतिमानों के साथ अपने आपको समायोजित कर पायेंगी। हिंदी इस दिशा में अपेक्षित गति से बढ़ रही है लेकिन इस दिशा में उसके समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं।

जब विश्वसमुदाय किसी राष्ट्र को अधिक महत्व व स्वीकृति प्रदान करता है तो उस राष्ट्र की सभी चीजें स्वत: महत्वपूर्ण बन जाती हैं। ऐसी स्थिति में भारत की विकासमान अंतर्राष्ट्रीय हैसियत हिंदी के लिए वरदान के समान है। वर्तमान वैश्विक परिवेश में भारत की बढ़ती उपस्थिति के

कारण हिंदी के उन्नयन की प्रक्रिया भी तेज हो गयी है। भूमण्डलीकरण के इस दौर में वह तेजी से आगे बढ़ रही है। वह राष्ट्र भाषा से विश्वभाषा बनने की प्रक्रिया में है। उसे नयी गति, नया जीवन व नया संस्कार मिल रहा है। नई-नई स्पर्द्धाओं में वह टिक पाने में सक्षम साबित हो रही है क्योंकि वह एक अत्यन्त गतिशील व जीवन्त भाषा है। उसका स्वभाव अत्यन्त उदारतावादी व संग्रहशील है, अत: वह दूसरी भाषाओं के प्रचलित व आवश्यक शब्दों को आत्मसात करती जा रही है। समय के अनुसार बदलने में वह पर्याप्त सक्षम है, इसीलिए वह शिक्षा, साहित्य, आपसी व सामाजिक सम्पर्क, संस्कृति, टी.वी, रेडियों, सिनेमा, मनोरंजन, इंटरनेट तथा ग्लोबल सक्रियता वाले बाजार तथा व्यापार में एक अत्यन्त सशक्त माध्यम के रूप में काम करने वाली भाषा साबित हो रही है। अन्य भाषाओं की तुलना में उसकी गति, उसकी पकड़ व उसका उत्पादन बढ़ा है जिसके कारण उसके स्वरूप में परिवर्तन दिखाई दे रहा है। हिन्दी भाषी क्षेत्र सबसे जीवंत व सक्रिय क्षेत्र है जो हिंदी की सबसे बड़ी ताकत है।

आज हिन्दी अंतर्राष्ट्रीय धरातल पर पूरी अस्मिता तथा क्षमता के साथ वर्धनशील है। वह विश्वसंदर्भ में केन्द्रीय बिंदु पर आ गयी है। विश्वस्तर पर उसकी स्वीकार्यता और व्याप्ति अनुभव की जा सकती है। हिंदी को जब विश्वभाषा की संज्ञा प्रदान की जा रही है तो प्रसंगत: 'विश्वभाषा' के स्वरूप पर विचार करना भी अपेक्षित है। सामान्यत: विश्वव्यवस्था को संचालित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली तथा अंतर्राष्ट्रीय संबधों में प्रयुक्त होने वाली भाषाएं 'विश्वभाषा' कही जा सकती हैं। डा. करूणाशंकर उपाध्याय ने विश्वभाषा के निम्नलिखित अभिलक्षण उल्लखित किए हैं :

1. उसके बोलने, जानने तथा चाहने वाले भारी तादाद में हों और वे विश्व के अनेक देशों में फैले हों।

2. उस भाषा में साहित्य-सृजन की प्रदीर्घ परम्परा हो और प्राय: सभी विधाएँ वैविध्यपूर्ण एवं समृद्ध हों। उस भाषा में सृजित कम से कम एक विधा का साहित्य विश्वस्तरीय हो।

3. उसकी शब्द-सम्पदा विपुल एवं विराट हो तथा वह विश्व की अन्यान्य बड़ी भाषाओं से विचार-विनिमय करते हुए एक दूसरे को प्रेरित -प्रभावित करने में सक्षम हो।

4. उसकी शाब्दी एवं आर्थी संरचना एवं लिपि सरल, सुबोध एवं वैज्ञानिक हो। उसका पठन-पाठन और लेखन सहज-संभाव्य हो। उसमें निरंतर परिष्कार और परिवर्तन की गुंजाइश हो।

5. उसमें ज्ञान-विज्ञान के तमाम अनुशासनों में वाङ्मय सृजित एवं प्रकाशित हो तथा नए विषयों पर सामग्री तैयार करने की क्षमता हो।

6. वह नवीनतम् वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियों के साथ अपने-आपको पुरस्कृत एवं समायोजित करने की क्षमता से युक्त हो।

7. वह अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक संदर्भो, सामाजिक संरचनाओं, सांस्कृतिक चिंताओं तथा आर्थिक विनिमय की संवाहक हो। उसमें इन सबको तथा विश्व मन की आकांक्षाओ को प्रतिबिंबित करने का माद्दा हो।

8. वह जनसंचार माध्यमों में बड़े पैमाने पर देश-विदेश में प्रयुक्त हो रही हो और वैश्विक मीडिया में उसका प्रभावी हस्तक्षेप हो।

9. उसका साहित्य अनुवाद के माध्यम से विश्व की दूसरी महत्वपूर्ण भाषाओं में पहुँच रहा हो। उसके पठन-पाठन तथा प्रसारण की सुविधा अनेक देशों में मौजूद हो।

10. उसमें मानवीय और यांत्रिक अनुवाद की आधारभूत तथा विकसित सुविधा हो जिससे वह बहुभाषिक कंप्यूटर की दुनिया में अपने समग्र सूचना स्रोत तथा प्रक्रिया सामग्री (Software) के साथ उपलब्ध हो। साथ ही वह इतनी समर्थ हो कि वर्तमान प्रौद्योगिकीय उपलब्धियों मसलन ई-मेल, ई-कॉमर्स, ई-बुक, इंटरनेट तथा एस.एम.एस. एवं वेब जगत में प्रभावपूर्ण ढंग से अपनी सक्रिय उपस्थिति का अहसास करा सके।

11. उसमे उच्चकोटि की पारिभाषिक शब्दावली हो तथा वह विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की नवीनतम आविष्कृतियों को अभिव्यक्त करते हुए मनुष्य की बदलती जरूरतों एवं आकांक्षाओं को वाणी देने में समर्थ हो।

12. वह विश्वचेतना की संवाहिका हो। वह स्थानीय आग्रहों से मुक्त विश्व दृष्टि सम्पन्न कृतिकारों की भाषा हो जो विश्वस्तरीय समस्याओं की समझ और उसके निराकरण का मार्ग जानते हों। उनके द्वारा सृजित साहित्य विश्वबंधुत्व एवं विश्वकल्याण की भावना से अनुप्राणित हो।[3]

उपर्युक्त प्रतिमानों पर हिंदी का परीक्षण करने पर ज्ञात होता है कि वह न्यूनाधिक मात्रा में प्रायः इन सभी निकषों पर खरी उतरती है। विश्व के करीब दो सौ देशों में से 140 देशों या उनके विश्वविद्यालयों में हिन्दी बोली, समझी व पढ़ाई जा रही है। हिन्दी भाषा की क्षमता व व्याप्ति का पता इस तथ्य से चलता है कि आज हिन्दी विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली दूसरी भाषा है। 1999 मे सर्वप्रथम टोकियो विश्वविद्यालय के प्रो. होजुमि तनाका ने 'मशीन ट्रांसलेशन समिट' अर्थात यांत्रिक अनुवाद नामक संगोष्ठी में भाषायी आंकड़े पेश करते हुए यह सिद्ध किया कि बोलने वालो की संख्या की दृष्टि से तो हिन्दी चीनी के बाद विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा बन गई है। उनके द्वारा प्रस्तुत आंकड़ो के अनुसार विश्वभर में चीनी भाषा बोलने वालों का स्थान प्रथम तथा हिन्दी का द्वितीय है। अंग्रेजी तो तीसरे क्रमांक पर पहुँच गई है। फिर भी यहाँ पर इस तथ्य को स्वीकार करना पड़ेगा कि अंग्रेजी के प्रयोक्ता विश्व के सबसे ज्यादा देशों में फेले हुए हैं तथा वह अंतराष्ट्रीय स्तर पर, प्रशासनिक, व्यावसायिक तथा वैचारिक गतिविधियों को चलाने वाली सबसे प्रभावशाली भाषा बनी हुई है। हिन्दी का संवेदनात्मक साहित्य उच्चकोटि का होते हुए भी ज्ञान का साहित्य अंग्रेजी के स्तर का नहीं है अतः निकट भविष्य में विश्वव्यवस्था परिचालन की दृष्टि से अंग्रेजी की

उपादेयता एवं महत्व को कोई खतरा नहीं है। इस मोर्चे पर हिन्दी को अभी उन्नत होने की आवश्यकता है। फिर भी हिंदी के पक्ष में महत्वपूर्ण बात यह है कि आज वह अंग्रेजी के बाद विश्व के सबसे ज्यादा देशों में व्यवहृत होती है।

हिन्दी अंतराष्ट्रीय धरातल पर पूरी क्षमता के साथ वर्धनशील है। मारीशस फिजी, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिनाद-टुबैगो, दक्षिण अफ्रीका, वर्मा, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, पाकिस्तान आदि देश तो हिंदी -बहुल हैं ही, इनके अलावा हालैण्ड, इंग्लैण्ड, कनाड़ा, अमेरिका, रूस, चीन और जापान आदि के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा व साहित्य का शिक्षण हो रहा है। विश्व के लगभग 30-35 देशों के 170 विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्यापन और शोध-केंद्र कार्यरत हैं। अकेले अमेरिका में लगभग 150 से ज्यादा शैक्षणिक संस्थानो में हिन्दी का पठन-पाठन हो रहा है।

इसके अतिरिक्त हिन्दी के विदेशी विद्वानों की श्रृंखला तथा परम्परा तो पिछले दो 'ढाई-सौ वर्षो से लगातार चल रही है जिसमें इंग्लैण्ड के जॉन गिलक्राइस्ट, ग्रियर्सन, फ्रांस के गार्सा द तासी, बेल्जियम के भारत प्रेमी फादर कॉमिल बुल्के, जापान के प्रो. दोई, ताोशि तनाका और तोशि मिजोकामी, रूस के वारान्निकोव, चेलिशेव, चेक के प्रो.ओदोनेल स्मेकल, आस्ट्रेलिया के प्रो. वाज, इटली की मारियो ला, जर्मनी के लोठार लुत्से और श्लैंडर, अमेरिका के चार्ल्स गोरडन तथा प्रो. गिब्रेला,चीन के पाओकाड आदि। और यह सिलसिला बहुत लंबा और बड़ा है।

हिन्दी की भीतरी ताकत और जीवनी-शक्ति उसकी साहित्यिक विरासत और लोक-व्यवहार से है। हिन्दी में साहित्य-सृजन की परम्परा बारह सौ साल पुरानी है। सरहपा, अमीरखुसरो, कबीर, सूर, तुलसी से लेकर प्रेमचंद, प्रसाद, निराला, नागार्जुन तक और वर्तमान में 21वीं सदी तक हिन्दी की ताकत प्रवहमान है- इसे कोई अंग्रेजी समाप्त नहीं कर सकती । हिन्दी का काव्य साहित्य तो संस्कृत के बाद विश्व के श्रेष्ठतम साहित्य की क्षमता रखता है। उसका उपन्यास व समालोचना साहित्य भी विश्वस्तरीय है। उसकी शब्द सम्पदा विपुल है। हिन्दी भाषा का अन्यतम् वैशिष्ट्य यह है कि उसमें संस्कृत के उपसर्ग तथा प्रत्ययों के आधार पर शब्द बनाने की अभूतपूर्व क्षमता है। उसके पास विश्व के श्रेष्ठत्म साहित्य की क्षमता है। उसके पास विश्व की सबसे बड़ी कृषि विषयक शब्दावली है। उसमें ग्रहण व त्याग का विवेक है। उसने अन्य भाषाओं के बहुप्रयुक्त शब्दों को उदारतापूर्वक ग्रहण किया है और जो शब्द अप्रचलित अथवा बदलते जीवन-संदर्भो से दूर हो गये है उनका त्याग भी कर दिया है। साथ ही हिन्दी के सर्वोत्तम साहित्य का विश्व की अनेकानेक भाषाओं में अनुवाद भी हो रहा है। हिन्दी की लिपि देवनागरी एक वैज्ञानिक लिपि है। देवनागरी में लिखी जाने वाली भाषाएं उच्चारण पर आधारित हैं। हिन्दी की शाब्दी व आर्थी संरचना प्रयुक्तियों के आधार पर सरल व जटिल दोनों है। हिन्दी व देवनागरी दोनों ही पिछले कुछ दशकों में परिमार्जन व मानकीकरण की प्रक्रिया से गुजरी हैं जिसमें उनकी संरचनात्मक जटिलता कम हुई है।

इसके अतिरिक्त हिन्दी को वैश्विक संदर्भ देने में उपग्रह चैनलों, विज्ञापन एजेंसियों, बहुराष्ट्रीय निगमों तथा यांत्रिक सुविधाओं का विशेष योगदान है। आज हिन्दी वैश्विक मीडिया की चहेती भाषाओं में से है। वह जनसंचार माध्यमों की सबसे प्रिय एवं अनुकुल भाषा बनकर निखरी है। सबसे ज्यादा लोकप्रिय टी.वी. चैनल हिन्दी में है जो हिन्दी का विस्तार करते हैं। हिन्दी चैनल कुल विज्ञापन उद्योग का चालीस प्रतिशत हिस्सा अपनी ओर खींचते हैं, इससे हिंदी में रोजगार बढ़ा है। हर वर्ष एक हजार से भी अधिक बनने वाली फिल्मों में से तीन चौथाई हिन्दी की होती हैं जिनका गीत-संगीत अहिंदी भाषियों को भी लुभाता है। हिन्दी सिनेमा अपने संवादों व गीतों के कारण विश्वस्तर पर लोकप्रिय हुआ है। साथ ही विश्वमन को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। देश में सबसे अधिक पत्र-पत्रिकाएँ हिन्दी में निकलती हैं तथा सबसे अधिक पढ़े जाने वाले दस अखबारों में से सात अखबार हिन्दी के हैं जहाँ लाखों लोग काम करते हैं। सबसे अधिक एफ एम रेडियो चैनल हिन्दी नगरों में खुले हैं। वस्तुस्थिति यह है कि आज भारत में ही नहीं अपितु दक्षिण पूर्व एशिया, मॉरिशस, मध्य एशिया, खाड़ी देशों, अफ्रीका, यूरोप, कनाडा तथा अमेरिका तक बड़ी मात्रा में उन्हें दर्शक भी मिल रहे हैं। ब्रिटेन व लंदन में बी.बी.सी. द्वारा प्रसारित हिन्दी कार्यक्रमों के श्रोता सबसे अधिक हैं। मॉरिशस में हिन्दी के सात चैनल प्रसारित हो रहे हैं। इस प्रकार हिन्दी अब नई प्रोद्योगिकी के माध्यम से विश्वव्यापी बन रही है। उसे ई-मेल, ई-कार्मस, ई-बुक, इंटरनेटए एस.एस.एस एवं बेब जगत में बड़ी सहजता से पाया जा सकता है। इंटरनेट पर हिन्दी की अनेक साइडें और ब्लॉग हैं जिनकी संख्या तेजी से बढ़ रही है। इंटरनेट जैसे वैश्विक माध यम के कारण हिन्दी के अखबार एवं पत्रिकाएँ दूसरे देशों में भी विविध साइड्स पर उपलब्ध हैं।

वैश्विक स्तर पर हिन्दी की क्षमता पर अपना अभिमत प्रस्तुत करते हुए डॉ. करूणशंकर उपाध्याय लिखते हैं-''विश्वमानव की बदलती चिन्तनात्मकता तथा नवीन जीवन स्थितियों को व्यंजित करने की भरपूर क्षमता हिन्दी भाषा में है वशर्ते इस दिशा में अपेक्षित बौद्धिक तैयारी तथा सुनियोजित विशेषता हासिल की जाय। आखिर उपग्रह चैनल हिन्दी में प्रसारित कार्यक्रमों के जरिए यही कर रहें हैं। आज 'डिस्कवरी चैनल', 'नेशनल ज्योग्राफिक चैनल', तथा 'दी कार्टून चैनल' अतिशय ज्ञानवर्धक सूचनाएँ प्रसारित कर रहें हैं। फिर भी यह सत्य है कि हिन्दी में अंग्रेजी के स्तर की विज्ञान व प्रौद्योगिकी पर आधारित पुस्तकें नहीं हैं। उसमें ज्ञान कांड से संबंधित विषयों पर उच्चस्तरीय सामग्री की दरकार है। विगत कुछ वर्षो से इस दिशा में उचित प्रयास हो रहे हैं। महात्मा गाँधी अंतराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा द्वारा हिन्दी माध्यम में एम.बी.ए. का पाठ्यक्रम आंरभ किया गया है। इसी तरह-इकोनामिक टाइम्स' तथा 'बिजनैस स्टैंडर्ड' जैसे अखबार हिन्दी में प्रकाशित होकर उसमें निहित संभावनाओं का उद्घोष कर रहें हैं। 'स्टार न्यूज' जैसे चैनल जो अंग्रेजी में आरम्भ हुए थे वे विशुद्ध बाजारीय दबाव के चलते पूर्णतः हिन्दी चैनल में रूपांतरित हो गए। साथ ही 'ई.एस.पी.एन.' तथा 'स्टार स्पोर्टस' जैसे खेल चैनल भी हिन्दी में कमेंटरी देने लगे हैं। यह हिन्दी का परम सौभाग्य है कि वह उपग्रह द्वारा प्रसारित चैनलो के जरिए अतंरिक्ष मार्ग से बेरोक-टोक विश्व के किसी भी देश में पहुँच रही है।''[4]

विश्व पटल पर हिन्दी को स्थापित करने में हमारे देश के नेताओं द्वारा दिए गये भाषणों व वक्तव्यों का भी योगदान है। इन्होंने समय-समय पर अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर हिन्दी में भाषण देकर उसकी उपयोगिता का उद्घोष किया है। अटल बिहारी बाजपेयी तथा नरसिंहराव ने संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिन्दी में भाषण दिए, इंदिरा गाँधी ने राष्ट्रमंडल देशों की बैठक में तथा चंद्रशेखर ने दक्षेस सम्मेलन के अवसर पर हिन्दी में भाषण दिए। इसी प्रकार अमिताभ बच्चन ने 'आस्कर' पुरस्कार सम्मान समारोह में हिन्दी में अपना भाषण देकर देशवासियों के स्वाभिमान को बढ़ाया है।

विश्व स्तर पर हिन्दी के स्वर को मुखरित करने में मॉरिशस, त्रिनिनाड, लंदन, यूरीनाम, न्यूयार्क आदि स्थानों पर सम्पन्न हुए विश्व हिन्दी सम्मेलनों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। पहला सम्मेलन सन् 1975 में नागपुर (भारत) में हुआ था और दसवां सम्मेलन भी हाल में ही भारत के भोपाल नगर में सम्पन्न हुआ है। 13 जुलाई 2007 को राष्ट्र संघ के मुख्यालय न्यूयार्क में आयोजित आठवें विश्व सम्मेलन के उद्घाटन समारोह पर संयुक्त राष्ट्र के महासचिव श्री बानकी मून ने कहा था कि -''हिंदी एक मीठी भाषा है, जो दुनिया भर के लोगों को पास लाने में काम कर रही है। यह एक ऐसी भाषा है जो दुनिया भर की संस्कृतियों के बीच एक सेतु का काम करती है।'' 5 हिन्दी को वैश्विक संदर्भ और व्याप्ति प्रदान करने में सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा विदेशों में स्थापित भारत विद्यापीठों की भी केन्द्रीय भूमिका रही है जो विश्व के अनेक महत्वपूर्ण राष्ट्रों में फैली हुई हैं। अब तक स्थापित विद्यापीठों के राष्ट्रों एवं विश्वविद्यालयों के नाम इस प्रकार हैं-

क्रम सं.	देश का नाम	विश्वविद्यालय का नाम
हिन्दी पीठ		
1	पोलैण्ड	वारसा विश्वविद्यालय
2	हंगरी	अतवोस लोरान विश्वविद्यालय
3	बुल्गारिया	सोफिया विश्वविद्यालय
4	दक्षिण कोरिया	हंकुक विश्वविद्यालय
5	रोमानिया	बुखारेस्ट विश्वविद्यालय
6	टर्की	अंकारा विश्वविद्यालय
7	बेल्जियम	घेंट विश्वविद्यालय
8	चीन	बीजिंग विश्वविद्यालय
9	स्पेन	वल्लाडोलिड विश्वविद्यालय
10	मास्को	जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केन्द्र
11	ट्रिनीडाड	वेस्टइंडीज विश्वविद्यालय
12	सूरीनाम	भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र
संस्कृत पीठ		
13	थाईलैंड	शिल्पफोन विश्वविद्यालय
14	फ्रांस	सोरबोन्स नूवेल

तमिल पीठ

15	पोलैंड	वारसा विश्वविद्यालय

आधुनिक भारतीय इतिहास, सभ्यता एवं दक्षिण एशियाई कार्यपीठ

16	ट्रिनीडाड	वेस्टइंडीज विश्वविद्यालय
17	किरगिस्तान	ओश विश्वविद्यालय

अंतर्राष्ट्रीय संबंध, राजनयिक एवं अंतर्राष्ट्रीय विधि पीठ

18	उज्बेकिस्तान	ताशकंद विश्वविद्यालय

समसामयिक भारतीय अध्ययन पीठ

19	मॉरीशस	महात्मा गाँधी संस्थान, मोका इसके बाद सिमेक्टर आधारित पीठें
	जर्मनी	हाइडलबर्ग वर्म विश्वविद्यालय
	मंगोलिया	नेशनल यूनिवर्सिटी
	मंगोलिया	(बुद्धिस्टस्टजी) नेशनल यूनिवर्सिटी

सरांश यह है कि हिन्दी विश्वभाषा बनने की दिशा में निरंतर अग्रसर है। वैश्वीकरण के इस दौर में जब विश्व की तमाम संस्कृतियां एवं भाषाएं आदान-प्रदान व संवाद की प्रक्रिया से गुजर रही हैं तो हिन्दी इस दिशा में विश्वमनुष्यता को निकट लाने में सेतु का काम कर सकती है। वास्तव में हिन्दी आज बाजार से जुड़ चुकी है। साथ ही अब हिन्दी इतिहास, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मानवविज्ञान, मनोविज्ञान आदि की भी भाषा हो गई है। अनेक विचारकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि इस भाषा में भी गंभीर विमर्श हो सकता है। सूचना व संचार क्रांति के कारण हिन्दी की बाजार में उपयोगिता बढ़ी है। यद्यपि हिंग्लिश का प्रयोग भी बढ़ा है, लेकिन वैश्वीकरण के दौर में कोई भी भाषा शुद्धता का दावा नहीं कर सकती। जरूरत इस सोच है कि हम हिन्दी को जड़ न बनने दें, उसे संकीर्णता से बचाएं तथा परिवर्तनशील तकनीकी में बाजार की चुनौतियों का सामना करने के लिए इसे तैयार करें। जब कोई भाषा अर्थ सत्ता से जुड़ जाती है तो उसकी वृहद् भूमिका को स्वीकार करना पड़ता है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि ''अंग्रेजी के दबाव के बावजूद हिन्दी बहुत ही तीव्र गति से विश्वमन के सुख-दुख और आशा-आकांक्षा की संवाहक बनने की दिशा में अग्रसर है यदि जयशंकर प्रसाद तथा मुक्तिबोध जैसे विश्वचेतस कवि अपनी रचनाओं में विश्वस्तरीय समस्याओं का चित्रण करते हुए आधुनिक सभ्यता की विसंगतियों पर प्रखर काव्यात्मक आक्रमण करते हैं तो आज विश्व के अनेक देशों में हिन्दी के साहित्यकार उभरकर सामने आ रहें हैं । आज विश्व के अनेक देशों में हिन्दी के दर्जनों देशों में हिन्दी की पत्रिकाएं निकल रही हैं तथा अमेरिका, इंग्लैण्ड,

जर्मनी, जापान, आस्ट्रिया जैसे विकसित देशों में हिन्दी के कृति रचनाकार अपनी सृजनात्मकता द्वारा उदारतापूर्वक विश्वमन का संस्पर्श कर रहे हैं। इस तरह तमाम निकषों एवं प्रतिमानों पर कसे जाने के बाद हिन्दी सही मायने में विश्व भाषा की गरिमा के साथ गतिमान है। वह विश्व के अनेक महत्वपूर्ण पक्षों से संदर्भित है। हिन्दी की भावी दिशा इस ओर संकेत कर रही है कि उसका विश्वसंदर्भ निरंतर फैल रहा है। हम वैचारिक खुलेपन का परिचय देकर इस सत्यकार्य को गति प्रदान कर सकते हैं।'[7]

उपरोक्त तथ्य हिन्दी की नई शक्ति और जीवंतता का प्रमाण हैं। पिछले सौ वर्षो में हिन्दी साहित्य उस मुकाम पर पहुँच गया है जहाँ वह विश्व साहित्य में मजबूती से खड़ा है। हिन्दी भारत की अस्मिता की अभिव्यक्ति ही नहीं है, वह भारतीय अस्मिता को संरक्षित करने वाली भाषा भी है। हिन्दी देश का गौरव है, देश का स्वाभिमान है, देश का आत्मविश्वास है। हमारी पहचान हिन्दी से है। लोकतांत्रिक जीवन-मूल्य हिन्दी की सांसों में बसते हैं और सर्वसमभाव उसकी नसों में धड़कता है। वह जनभाषा है, वह राष्ट्रभाषा है, वह हमारी सांस्कृतिक चेतना की संवाहक भाषा है। एकमात्र हिन्दी भाषा ही हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है जो आज अंतर्राष्ट्रीय धरातल पर पूरी अस्मिता तथा क्षमता के साथ वर्धनशील है और विश्वसंदर्भ में केन्द्रीय बिंदु पर आ गयी है।

संदर्भ सूची

यादव सुरेश सिंह : *समकालीन सोच*, जनवरी 2014, पृष्ठ संख्या-25

महेश्वरी सुरेश : *हिंदी राष्ट्र भाषा से विश्व भाषा की ओर*, पृष्ठ संख्या-100

उपाध्याय करूणाशंकर : *हिन्दी का विश्व संदर्भ*, पृष्ठ संख्या-10-11, 15 एवं 17-19

संकल्प, संपादक प्रो. टी. मोहन सिंह, हैदराबाद, जुलाई-सितम्बर-2014 पृष्ठ संख्या 25